तर्ज--सत्यम् शिवम् सुन्दरम
सच्चिदानन्द है,वो ही पिऊ है, पिऊ ही अपना है
रूहों उठकर देखो, निज आनन्द ही अपना है
आनन्द अपना अखण्ड
1--एक सरूप है लीला दोए,
आनन्द है निजघर में
सतअंग की लीला सत्ता की,
जो है अक्षर ब्रह्म
अक्षर पार है हम
2--नूर सरूप है युगल पिया जी,
अंग श्यामा जी रूहें नूर
नूर समाया है कण कण में,
नूर चांद और सूर
नूरी है अपना वतन
3--इश्क सरूप है वो पिया जी,
दिल तो श्यामा जी है
श्यामा जी से आनन्द रूहों का,
लीला ये वाहेदत की है
धाम धनी के है तन

Nijanand App